THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

निरन्तर रोज़गार के लिए प्रार्थनाएँ
Prayers For Consistent Employment

Author: Serena Seid-Graham

The Christian Science Sentinel Vol. 112, No. 40, October 4, 2010

क्या बिना उत्तर मिले आपने नौकरी के लिए प्रार्थना पत्र भेजा है? या आप नौकरी के लिए कई बार इन्टरव्यू देने गए हो (जिन पर आपको विश्वास था कि वे बहुत अच्छे हुए), हर बार केवल यही बताया जाता कि किसी और को रख लिया गया है, जब कि आप "पहले तीन" में थे? या शायद आपको नौकरी मिल गई, केवल यह पता लगने के लिए वह वास्तव में अस्थाई थी; या फिर कम्पनी अपने कर्मचारी घटा रही थी, और आप आखिर में रखे गए थे इसलिए सबसे पहले निकाले जाओगे। कुछ समय बाद हम प्रलोभित हो कर निराश, यहाँ तक कि अयोग्य महसूस करना शुरू कर देते हैं। तुम शायद यह भी विश्वास करने लगते हो कि तुम आर्थिक या आयु के खालीपन में फँस गए हो, और फिर से नौकरी पाने की कोई उम्मीद नहीं है।

लगभग दो सालों के लिए, यह मेरे जीवन की निरंतर अवस्था थी, इसके साथ-साथ यह तथ्य भी, कि मेरे पति का कारोबार मंदा हो कर लगभग ठप्प ही हो गया था। इसके बावजूद, क्रिश्चियन साँयस की खोजकर्त्री मेरी बेकर ऐडी द्वारा प्रदान किए गए आध्यात्मिक साधन विशेष रूप से उनकी पुस्तक साँयस एण्ड हैल्थ के साथ ही साथ बाइबल, तथा क्रिश्चियन साँयस की चर्च सेवाओं और पत्रिकाओं द्वारा भी-मैं बहुत उत्कृष्ट पल तथा अच्छाई की उम्मीद को अनुभव कर सकी, तब भी जब बाहरी दृश्य निराशाजनक दिखाई दे रहा था।

अक्सर प्रेरणा के उन पलों में, बाइबल में प्रेरित पॉल का प्रश्न मुझे याद आता, "क्राइस्ट के प्रेम से हमें कौन अलग कर सकता है?" (रोमियो 8:35) इसके बाद मेरा ज़बरदस्त जवाब होता,"कोई नहीं, कुछ भी नहीं!" कभी-कभी, मैं बहुत दृढ़ हो जाती थी जब नकारात्मक, निराशाजनक विचारों से व्याकुल होती थी तथा नकारती थी कि वे मुझ पर कोई भी प्रभाव डाल सकते हैं। वह मुझे दिव्य मन, या जीवन, से अलग नहीं कर सकते थे, जो कि अच्छा है क्योंकि परमेश्वर अच्छा है।

साँयस एण्ड हैल्थ में पॉल के "जुदा होने के प्रश्न" से सम्बंधित एक कथन मेरे लिए बहुत सहायक था। उसके एक भाग में लिखा है, "यह क्रिश्चियन साँयस का वाद् है, कि दिव्य प्रेम अपनी अभिव्यक्ति से या वस्तु से वंचित नहीं हो सकता; . . ." (पृष्ठ 304) मेरे लिए इसका यह मतलब है कि क्योंकि दिव्य प्रेम, परमेश्वर स्व-रचित, स्वतः अभिव्यक्त तथा सर्व-विद्यमान है, इसे परमेश्वर की पूर्णतः अच्छी तथा सम्पूर्ण रचना, द्वारा सदा तथा " सभी रास्तों में" प्रकट तथा व्यक्त होना होगा, जिस में मैं भी शामिल हूँ। अर्थात, जो कुछ भी प्रेम, अच्छाई से नहीं है, वह प्रकटीकरण, या वस्तुनिष्ठ होने से अवश्य वंचित होगा

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

यह मेरे असली व्यक्तित्व का भाग नहीं हो सकता था क्योंकि प्रेम, सर्वेसर्वा में इसका कोई हिस्सा नहीं था।

अक्सर, आध्यात्मिक दृढ़ता के इस समय में इस दिव्य अच्छाई के कुछ बाहरी व्यवहारिक प्रकटीकरण भी दिखाई दिए, जैसे कि समय पर मिली हुई आयकर की धन राशि, या मेरे पति को मिलने वाली जायदाद का एक हिस्सा जिसकी उम्मीद नहीं थी। या एक अस्थाई नौकरी के नियत–कार्य के लिए मुझे बुलावा आना या प्रिय दोस्तों और परिवार के सदस्यों की विवेकशील उदारता। साथ ही मैं क्रिश्चियन साँयस बांच चर्च की क्लर्क गन गई, जिसने मुझे उपयोगी तथा लाभदायक महसूस करने का अवसर दिया। इस प्रकार, मेरी नौकरी की स्थिति के बावजूद सेवा तथा योग्यता की एक भावना विचार में फिर से प्रकट होने लगी थी।

अभी भी, निरंतर रोज़गार की संभावनाएं हमारे परिवार के साथ छल करती नज़र आ रही थी तथा कुछ महीने अन्य महीनों से अधिक अपूर्ण थे, जब खर्चों को पूरा करने का समय आता था। हताशा के कुएँ में समय–समय पर वापिस डूबने का प्रलोभन उसके कुरूप सिर को फिर से उठा देता था। तथा इस वर्ष के आरंभ में मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मैं किसी और अन्धकार में गिरती जा रही थी।

मैं जागरूक हो गई कि मेरे विचार कितने नकारात्मक थे, तथा प्रेरणा की तलाश में मेरी बेकर ऐडी के लेखों में से एक खोला, जिसमें यह पद्यांश मुझे मिलाः "थोड़ी और सद्भावना, पवित्र किया हुआ एक उददेश्य, नम्रता से कहे कुछ सत्य, पिघला हुआ एक हृदय, एक विनम्र स्वभाव, एक निष्ठावान जीवन, मानसिक क्रियाविधि की सही क्रिया को पुनः स्थापित कर देगा, तथा शरीर और अन्तश्चेतना की गति को परमेश्वर के अनुसार प्रकट कर देगा।" (मिसलेनियस राईटिन्गस 1883–1896, पृष्ठ 354) वह पूरी तरह से वही थी जिसकी मैं तीव्र इच्छा कर रही थी–"मानसिक क्रियाविधि की सही क्रिया" का पुनः स्थापन। उस कथन ने मुझे स्पष्ट कर दिया था कि और किसी भी चीज़ से अधिक, मुझे जीवन की समझ को परिवर्तनशील बनाने या उसके आध्यात्मिकिकरण की ज़रूरत थी। मुझे यह नौकरी पाने से भी अधिक चाहिए था। इसे विचार में सबसे ऊपर रखने के लिए मैंने इस पद्यांश की एक प्रतिलिपि बनाई, उसे याद किया, और स्नानघर के शीशे पर चिपका दिया।

अगले कुछ दिनों के लिए, मैंने इस पद्यांश की सूची में लिखी "छः शर्तों" में से हर एक के अर्थ के बारे में कई बार सोचा तथा जो मैं सीख रही थी, उसे कैसे प्रयोग में लाऊँ। यह कहता है "थोड़ी और सद्भावना"– ढेर सारी नहीं, बल्कि थोड़ी सी। मैं यह कर सकती थी। जैसे मैं अपने दिनचर्या में आगे बढ़ी, मैंने थोड़ी और विनम्रता अभिव्यक्त करने की कोशिश की तथा जब मैंने दूसरों से बात की या उनके बारे में सोचा तब मैंने कम हठ करने की कोशिश की। "पवित्र किया हुआ एक उद्देश्य" का अर्थ, परमेश्वर के विभिन्न समानार्थकों को अभिव्यक्त करने के लिए चेतन होना, जैसे कि सिद्धांत, मन, या प्रेम, यहाँ तक कि सबसे छोटे कार्यों को करते समय भी। "नम्रता से कहे कुछ सत्य" का अर्थ प्रतिदिन स्वयं को, या परिवार के सदस्यों को, यदि ज़रूरत है तो मेरी बिल्ली को भी कुछ आध्यात्मिक सत्यों को नरमी से, प्रेमपूर्वक तथा सकारात्मक ढ़ंग से कहना। "पिघला हुआ एक हृदय" का अर्थ किसी भी कठोर या निन्दनीय सोच को, जाने देना है, जिसे मैं शायद शरण दे रही हूँ, या तो दूसरों के बारे में या स्वंय के। "एक विनम्र स्वभाव" का अर्थ यह नहीं है कि किसी की अनोखी पहचान या खुशनुमा स्वभाव को नकारना, बल्कि इसका अर्थ हो सकता है धैर्य से कार्य करना, झूठे आत्मत्व या आत्म–महत्ता को त्यागना, तथा इसके बजाए अन्तश्चेतना को गौरान्वित करना, अपने सच्चे व्यक्तित्व तथा आत्मत्व के स्त्रोत को। तथा "एक निष्ठावान जीवन" का अर्थ हो सकता है, अपने जीवन को अपने माता–पिता के "व्यवसाय" में

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

पुर्नसमर्पित करना, क्राइस्ट जीसस तथा मेरी बेकर ऐडी की शिक्षाओं का अधिक गहराई तथा आज्ञाकारिता से पालन करने की कोशिश करना। मैं कई दिनों तक इन विचारों से प्रोत्याहित रही।

उस समय, एक अस्थायी रोज़गार संस्था द्वारा मुझे केवल एक दिन रिसेप्शनिस्ट की तरह काम करने के लिए बुलावा आया। एक दिन का वेतन मुझे हर हफ्ते मिलने वाले बेरोज़गार बीमे की छोटी धनराशि की भरपाई के मुकाबले में कुछ भी नहीं था, परन्तु "थोड़ी और सद्भावना" को व्यक्त करने की इच्छा से मैंने सौंपा हुआ कार्य स्वीकार कर लिया। नौकरी करते समय – क्योंकि कभी – कभी फोन कॉल का जवाब देने के सिवाय और कुछ करने को नहीं था – मैंने क्रिश्चियन साँयस जरनल के अंक को पढ़ना शुरू किया जिसे मैं अपने साथ लाई थी अचानक मेरे मन में सवाल उठा, वास्तव में रोज़गार पाने का क्या अर्थ है?

मैंने समझा कि मैं कभी बेरोज़गार नहीं हो सकती, क्योंकि मेरी न खत्म होने वाली नौकरी परमशेवर की विशेषताओं को अभिव्यक्त करना है!

उत्तर मिला कि **परमेश्वर** हम सब को **अपनी** अनन्त आध्यात्मिक विशेषताओं को व्यक्त करने के लिए रोज़गार देता है। उदाहरण के लिए **अन्तश्चेतना** हमे रचनात्मकता और सच्ची खुशी को व्यक्त करने के लिए रोज़गार देती है; **मन** सही सोच ओर उपयोगिता को व्यक्त करने के लिए; **प्रेम** निःस्वार्थता तथा क्षमाशीलता को व्यक्त करने के लिए; **सिद्वांत** सुस्पष्टता, तथा समयनिष्ठा को व्यक्त करने के लिए; **सत्य** विश्वासपात्रता तथा आध्यात्मिक वास्तविकता को व्यक्त करने के लिए; **आत्मा** समन्वित क्रिया तथा सामर्थ्य को व्यक्त करने के लिए; **जीवन** असीमित उत्साह तथा सेहत को व्यक्त करने के लिए। मैंने यह तथा अन्य आध्यात्मिक विशेषताओं को लिखना शुरू कर दिया। एक पृष्ठ भरने के बाद, मैंने समझा कि मैं कभी बेरोज़गार नहीं हो सकती, क्योंकि मेरी न खत्म होने वाली नौकरी **परमशेवर** की विशेषताओं को अभिव्यक्त करना है! इस समझ के लिए मैं क्रतज्ञता के साथ भर गई तथा अपने परिवार के भविष्य के लिए चिंतित होना बंद कर दिया।

एक दो दिन बाद, मुझे एक निजी हाई स्कूल से ई – मेल आई, यह स्पष्ट करते हुए कि वह भाषा के लिए एक अध्यापिका ढूँढ रहे थे तथा उन्हें मेरा (तीन साल पुराना) नौकरी के लिए प्रार्थना पत्र उनके संबंधी कॉलेज से मिला। उन्होंने मुझे प्रार्थना पत्र भेजने के लिए आमंत्रित किया। फिर कुछ दिनों के बाद जिस कॉलेज ने उन्हें मेरा प्रार्थना पत्र दिया था उन्होंने भी मुझे संपर्क किया। यह पूछते हुए कि क्या मैं उनके वहाँ पढ़ाने में रूचि रखती हूँ। एक सप्ताह में ही, मेरे पास दोनों स्कूल देखने तथा प्रतिदर्शित कक्षाएँ पढ़ाने का अवसर मिलां एक के बाद एक मुझे दोनों स्कूलों द्वारा पढाने के पद् का प्रस्ताव मिला, तथा अंत में और कृतज्ञता से मैंने कॉलेज के पद् को स्वीकार कर लिया। यह सब कुछ तीन हफ्तों के अन्दर ही घटित हुआ। और इसके साथ ही मेरे पति का व्यवसाय भी उन्नत होने लगा। अपनी कविता "माता की संध्या की प्रार्थना" में श्रीमति ऐडी ने लिखा, "दिव्य **जीवन** जो प्रतीक्षा की हर घड़ी को अपनाता है।" (पोएमस, पृष्ठ4)

यदि यह दिखाई देता है कि तुम बहुत समय से रोज़गार पाने के लिए या तुम्हारे जीवन में अच्छाई, **परमेश्वर** के किसी भी प्रमाण के लिए इन्तज़ार कर रहे हो, तो अपने इस प्रभावशाली विचार द्वारा आराम तथा प्रोत्साहन प्राप्त कर सकते हो क्योंकि अच्छाई, **परमेश्वर** हर एक प्रतीक्षा की घड़ी को अपनाता है, क्योंकि **परमेश्वर**, दिव्य **मन**, **जीवन**, तथा **प्रेम** के पास तुम्हारे हर एक घन्टे, दिन, मिनट, सैकिन्ड की मलकीयत (स्वामित्व) है, तब एक भी ऐसा क्षण नहीं होता जब आप पूर्ण रूप से उपयोगी तथा लाभदायक तरीके से रोज़गार में नहीं होते।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.